वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उपनिषद की उपादेयता

अवधेश कुमार पाण्डेय

शोध छात्र, संस्कृत विभाग
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।

दर्शन वह विधा है जो आदर्श की अवधारणा पर आधारित है। सम्पोष्य विकास को विकास का प्रतिमान मानती है। यह उपनिषद दर्शन का मूल है। इसमें जीवन की समस्या को समग्रता की दृष्टि से देखा जाता है।

उपनिषद शब्द का विश्लेषण करने पर हमें यह जानकारी होती है कि यह शब्द उप, नि और सद् के संयोग से बना है। 'उप' का अर्थ है समीप और 'नि' का अर्थ है श्रद्धा तथा 'सद्' का अर्थ है बैठना। इस प्रकार इसका अभिप्राय यह है कि शिष्य का गुरू के समीप उपदेश के लिए श्रद्धापूर्वक बैठना। उपनिषदों में गुरू और शिष्य के वार्तालाप भरे पड़े हैं। धीरे–धीरे उपनिषद का अर्थ गुरू से पाया हुआ रहस्य ही हो गया। पॉल डायसन ने उपनिषद का अर्थ रहस्यमय उपदेश ही बतलाया है। केनोपनिषद के एक मन्त्र में उपनिषद शब्द का प्रयोग हुआ है। इसका अर्थ आचार्य शंकर ने अपने भाष्य में रहस्य बताया है। उपनिषद वह विधा है जिसके अध्ययन से मानव भ्रम से रहित हो जाता है तथा सत्य की प्राप्ति करता है। ज्ञान के द्वार मानव के अज्ञान का पूर्णतः नाश होता है।

उपनिषद के आवश्कता के सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि आज संसार में सर्वत्र मजहब, जाति, उपजाति, क्षेत्र, भाषा आदि के नाम पर विभाजक प्रवृत्तियॉ दिखाई देती हैं। वर्तमान में अगड़े–पिछड़े में, पिछड़े–अनुसूचित जाति में, अनुसूचित जाति–अनुसूचित जनजाति आदि में विभाजन देखा जा सकता है। इससे समाज अत्यधिक विषाक्त और विद्वेषपूर्ण हो गया है। इन समस्याओं के समाधान के क्रम में हम उपनिषद की अभेद दृष्टि, 'अनेकता में एकता' की शिक्षा से सीख ले सकते हैं।

उपनिषदों में प्रायः सभी दार्शनिक सम्प्रदाओं की जड़ मौजूद है चाहे वे आस्तिक हों या नास्तिक। उदाहरण के लिए चार्वाक सरीखे जड़वाद के समर्थक तैत्तिरियोपनिषद का वह मन्त्र उद्धृत करते हैं जिसमे कहा गया है कि पुरुष अन्नमय और रसमय है। शून्यवाद के समर्थक बौद्ध दार्शनिक इसी उपनिषद के उस मन्त्र से प्रमाण प्राप्त करते हैं जहॉ कहा गया है कि पहले यह संसार असत् ही था। कुमारिल भट्ट ने सिद्ध किया कि बौद्ध दर्शन विज्ञानवाद, क्षणभंगवाद, अनात्मवाद तथा वैराग्यवाद उपनिषद से ही निकले हैं।

उपनिषदों से भारतीय दार्शनिकों को मार्ग मिलता रहा है। उपनिषदों का लक्ष्य मानवीय आत्मा को शान्ति प्रदान करना है, जब–जब भारत में महान क्रान्तियॉ हुई हैं तब–तब यहॉ के दार्शनिकों ने उपनिषदों से प्रेरणा ग्रहण की है। उपनिषदों ने संकट काल में मानव का नेतृत्व कर अपूर्व योगदान

प्रस्तुत किया है। चर्तमान समय में भी जब दर्शन और धर्म तथा दर्शन एवं विज्ञान के बीच विरोध खड़ा होता है। तब उपनिषदें विरोधी प्रवृत्तियों के बीच समन्वय के द्वारा हमारा मार्गदर्शन करती हैं। प्रो0 रानाडे का कथन है कि ''उपनिषदें हमें ऐसी दार्शनिक दृष्टि दे सकती हैं जो मानव की दार्शनिक, वैज्ञानिक एवं धार्मिक मागों की एक साथ पूर्त्ति कर सके'' सत्य प्रतीत होता है। उपनिषद से भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों ने निरन्तर प्रेरणा ग्रहण की है। महात्मा गॉधी, श्री अरविन्द घोष, विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डॉ0 राएाकृा, विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डॉ0 राधाकृष्णन आदि भारतीय मनीषियों को उपनिषद् ने प्रेरित किया है। इसीलिए उपनिषद् को विश्व ग्रन्थ कह कर प्रतिष्ठित किया गया है।

भारतीय दर्शन की मुख्य प्रवृत्ति आध्यात्मिक है। उपनिषद् भारतीय दर्शन में आध्यात्मवाद का प्रतिनिधित्व करता है। जब–तक भारतीय दर्शन में आध्यात्मवाद की सरिता जीवित रहेगी तब तक उपनिषद् दर्शन का महत्त्व जीवित रहेगा। उपनिषद् का शाश्वत महत्त्व है।

वेदान्त की मान्यता है कि सभी जीवों का अन्तःस्थ सत्य एक है। इस शिक्षा ने विश्व में प्रेम, एकता, उदारता, सहानुभूति एवं विश्व दृष्टि को बढ़ावा दिया। इसी से प्रेरित होकर हमनें विश्व को एक इकाई स्वीकार करके 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' एवं विश्व प्रेम का उदघोष किया। मानव जीवन में इन सद्गुणों को अद्वैत वेदान्त के जीवो ब्रह्मैव नापरः सिद्धान्त से जितनी प्रेरणा मिली, उतनी किसी अन्य सिद्धान्त से नहीं। आज विश्व शान्ति एवं अन्तर्राष्ट्रियता के आदर्श की पृष्ठभूमि में वेदान्त का ही प्रभाव है। जब सभी जीव में एक ही परमात्म तत्त्व व्याप्त है तब मनुष्य – मनुष्य से कैसे द्वेष रख सकता है ? इर्ष्या, द्वेष, घृणा, लड़ाई से भरी आज की दुनियॉ वेदान्त का अनुसरण करके ही इसका निदान खोज सकती है। यदि सभी जीवों में एक ही आत्मा की सत्ता है, तो मानव जाति में जाति–भेद, रंग–भेद, नस्ल–भेद, लिंग–भेद, ऊँच–नीच इत्यादि भेद कैसे हो सकता है?

भेद दृष्टि के परिणामस्वरूप वर्तमान मानव समाज में 'अयं निजः परोवेति', भ्रष्टाचार, स्वार्थवाद आदि दोषों को बढ़ावा मिला है। वेदान्त ने अभेद दृष्टि और विश्वात्म की शिक्षा देकर माानवमात्र की एकता पर बल देकर मनुष्य–मनुष्य में सभी सम्भाव्यअत्याचार से दूर रहने, उससे लड़ने तथा लोकहित में प्रयासरत होने के लिए प्रेरित किया। वेदान्त की जगत् मिथ्यात्त्व की अवधारणा ने उन लोगों को सावधान किया जो जगत् में अनेक बुरे कार्यों में लिप्त रहते हैं। अतः स्पष्ट है कि वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उपनिषद चिन्तन का व्यक्ति समाज के लिए आज भी महत्त्व है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. डायसन पाल, फिलासफी ऑफ उपनिषद।
2. केनोपनिषद 4.7
3. उपनिषद रहस्यं यच्चिन्त्यं, केनोपनिषद, शंकरभाष्य
4. स वा पुरुषो अन्नरसमयः, तैत्तरियोपनिषद 2.1.1
5. असद्वा इदमग्र आसीत ततो वै सदजायत तैत्तरियोपनिषद, 2.7.1
6. विज्ञानमाक्षणभंगनैरात्म्यवादानामापि उपनिषदप्रभवत्वम विषयेषु आत्यान्तिकं रांगविनिवर्तयितुमिति दत्पन्नम् सवेषा प्रामाण्यम्। तन्त्रवार्तिक